شیخِ طریقت, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

के अ़त़ा कर्दा इल्मो ह़िक्मत भरे महके महके म-दनी फूलों का ह़सीन तह़रीरी गुलदस्ता

फै़ज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त़ : 8)

सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन

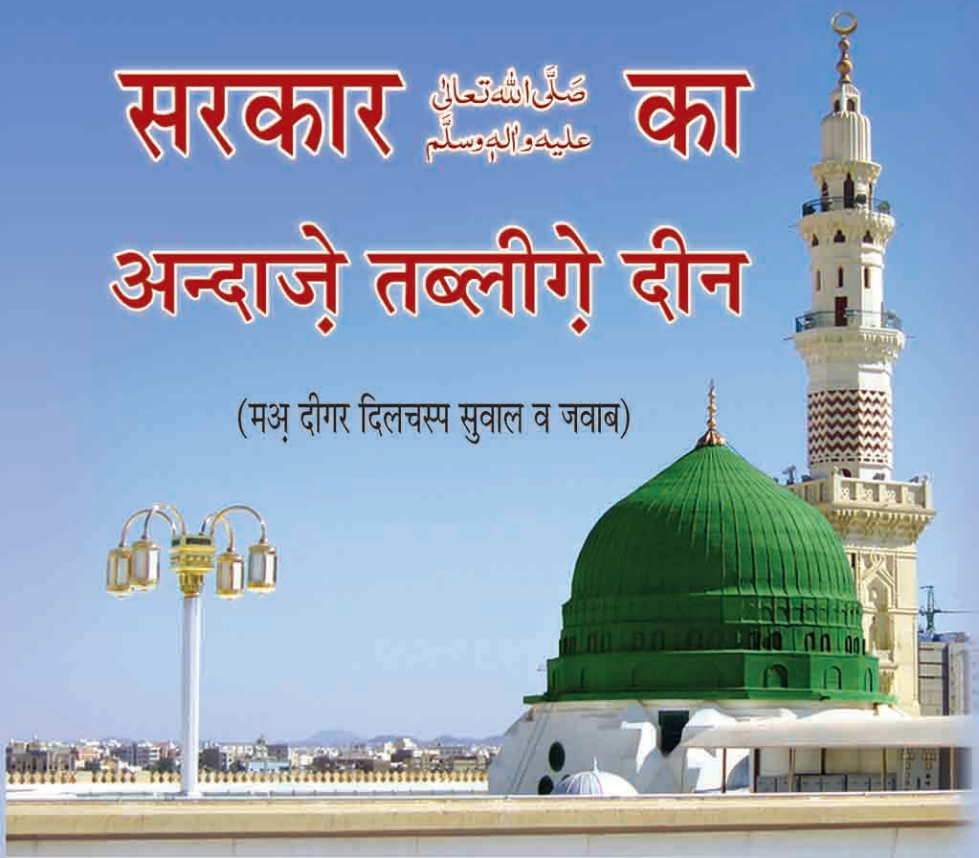

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

- सरकार ﷺ का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन
- बुज़ुर्गाने दीन का सब्रो तह़म्मुल और हुस्ने अख़्लाक़
- अख़्लाक़े करीमा की एक झलक
- मुबल्लिग़ीन के लिये 10 म-दनी फूल
- कुफ़्फ़ार से दोस्ती करना कैसा है ?

(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन

येह रिसाला (**सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन**) दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ **''मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा

9 रबीउ़ल अव्वल 1436 सि.हि./ 1 जनवरी 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (31 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, सरापा जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 ...... اَلْبدورُ السّافرۃ فی اُمورِ الاٰخرۃ، ص ۱۳۱، حدیث ۳۶۶

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन

अ़र्ज़ : हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीने इस्लाम की दा'वत को कैसे आ़म फ़रमाया ?

इर्शाद : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इब्तिदाअन तीन साल तक इस्लाम की ख़ुफ़्या दा'वत दी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से अ़लल ए'लान तब्लीग़ व इर्शाद का हुक्म हुवा। इस्लाम की अ़लल ए'लान दा'वत शुरूअ़ होते ही ज़ुल्मो सितम की जां सोज़ आंधियां चल पड़ीं। आह ! नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अन्वर पर कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार कभी कूड़ा करकट फेंकते तो कभी रास्तों में कांटे बिछाते, कभी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदने अत़्हर पर पथ्थर बरसाते तो कभी ऐसा भी हुवा कि सज्दे की ह़ालत में पुश्ते अत़्हर पर बच्चा दान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) रख दिया। **इ़लावा** अज़ीं कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़-ज़मत निशान में गुस्ताख़ाना जुम्ले बकते, फब्तियां कस्ते, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जादूगर और काहिन[1] भी कहते ह़त्ता कि उन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अ़लल ए'लान

मदीना

1..... जिन्नों से दरयाफ़्त कर के ग़ैब की ख़बरें या क़िस्मत का ह़ाल बताने वाला।

www.dawateislami.net

शहीद करने का फ़ैसला कर लिया। इस के बा'द कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम की वज्ह से बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब को भी तीन साल तक मुसल्मानों के साथ भूके प्यासे शअ़बे अबी त़ालिब में महसूर रहना पड़ा।

पयम्बर दा'वते इस्लाम देने को निकलता था
नवीदे राह़तो आराम देने को निकलता था
निकलते थे कुरैश उस राह में कांटे बिछाने को
वुजूदे पाक पर सो सो त़रह़ के ज़ुल्म ढाने को
ख़ुदा की बात सुन कर मुज़्ह़के में टाल देते थे
नबी के जिस्मे अत़्हर पर नजासत डाल देते थे
तमस्ख़ुर करता था कोई, कोई पथ्थर उठाता था
कोई तौह़ीद पर हंसता था, कोई मुंह चिड़ाता था
कुरैशी मर्द उठ कर राह में आवाज़े कसते थे
येह नापाकी के छर्रे चार जानिब से बरसते थे
कलामे ह़क़ को सुन कर कोई कहता था येह शाइ़र है
कोई कहता था काहिन है कोई कहता था साह़िर है
मगर वोह मम्बए ह़िल्मो ह़या ख़ामोश रहता था
दुआ़ए ख़ैर करता था जफ़ा व ज़ुल्म सहता था

ए'लाने नुबुव्वत के बा'द नव साल तक मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم مक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में लोगों में नेकी की दा'वत देते रहे मगर बहुत थोड़े अफ़राद ने दा'वते इस्लाम को क़बूल किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के प्यारे प्यारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर कुफ़्फ़ारे ना हन्जार के ज़ुल्मो जोर का ज़ोर बढ़ता जा रहा था। इन ना गुफ़्ता बिह ह़ालात में बिल आख़िर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم त़ाइफ़ तशरीफ़ ले गए और पहले पहल बनू सक़ीफ़ के तीन सरदारों को इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया।

अफ़्सोस ! उन नादानों ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी बातें सुन कर बजाए सरे तस्लीम ख़म करने के निहायत ही सर-कशी का मुज़ा-हरा किया मगर मेरे प्यारे आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अब भी हिम्मत न हारी और दूसरे लोगों की त़रफ़ तशरीफ़ लाए और उन्हें दा'वते इस्लाम पेश की मगर उन ज़ालिमों ने सिर्फ़ ऊल फूल बकने ही पर इक्तिफ़ा न की बल्कि औबाश लड़कों को भी पीछे लगा दिया जिन्हों ने आह ! आह ! सद हज़ार आह ! मेरे मीठे मीठे आक़ा, रह़मते आ़-लमिय्यान आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक पर संगबारी शुरूअ़ कर दी जिस से जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मी हो गया और इस क़दर ख़ून शरीफ़ बहा कि ना'लैने मुबा-रकैन ख़ून मुबारक से भर गईं। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बे क़रार हो कर बैठ जाते तो कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार बाज़ू थाम कर उठा देते, जब फिर चलने लगते तो दोबारा पथ्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते।

www.dawateislami.net

बढ़े अम्बौह दर अम्बौह पथ्थर ले के बेगाने
लगे मींह पथ्थरों का रह़मते आ़लम पे बरसाने
वोह अब्रे लुत़्फ़ जिस के साए को गुलशन तरसते थे
यहां त़ाइफ़ में इस के जिस्म पर पथ्थर बरसते थे
जगह देते थे जिन को ह़ामिलाने अ़र्श आंखों पर
वोह ना'लैने मुबारक हाए ख़ूं से भर गईं यक्सर
ह़ुज़ूर इस जोर से जब चूर हो कर बैठ जाते थे
शक़ी आते थे बाज़ू थाम कर ऊपर उठाते थे

क़ुरबान जाइये ! सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कि इतना सताए जाने के बा वुजूद भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ात के लिये ग़ुस्सा नहीं आता और न ही अपने दुश्मन की बरबादी व हलाकत की आरज़ू है । अगर कोई आरज़ू है तो फ़क़त़ येही कि इस्लाम का बोलबाला हो, इस्लाम की रोशनी फैले और लोग ख़ुदाए वह़्-दहू ला शरीक की बारगाह में झुक जाएं । सय्यिदुस्स-क़लैन, रह़मते दारैन, शहन्शाहे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते शरीफ़ा थी कि हर साल मौसिमे ह़ज में तमाम क़बाइले अ़रब को जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا और नवाह़े मक्का زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मौजूद होते दा'वते इस्लाम दिया करते थे । इसी ग़रज़ से उन के मेलों में भी तशरीफ़ ले जाया करते ।

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के डेरों पर

www.dawateislami.net

जा कर तब्लीग़ फ़रमाते मगर कोई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तआ़वुन करने में आगे न बढ़ता, अ़रब के इन सब क़बाइल को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दा'वते इस्लाम दी मगर कोई ईमान न लाया, अबू लहब लई़न हर जगह साथ जाता, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं बयान फ़रमाते तो वोह बराबर से कहता : इस का कहना न मानो, येह बड़ा दरोग़ गो (या'नी झूटा), दीन से फिरा हुवा है । (وَالعِيَاذُ بِاللّٰه) । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने दीन और अपने रसूल का ए'ज़ाज़ मन्ज़ूर था, इस लिये नुबुव्वत के ग्यारहवें साल माहे र-जबुल मुरज्जब में जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़स्बे आ़दत मिना शरीफ़ में उ़क़्बा के नज़्दीक क़बीलए ख़ज़रज के छ[6] आदमियों को इस्लाम की दा'वत दी तो वोह ईमान ले आए ।

उन्हों ने मदीनए पाक पहुंच कर अपने भाई बन्दों को इस्लाम की दा'वत दी, आयिन्दा साल बारह मर्द अय्यामे ह़ज में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا आए और उन्हों ने उ़क़्बा के मुत्तसिल नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ पर औ़रतों की त़रह़ बैअ़त की, कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे, चोरी न करेंगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगे, ज़िना न करेंगे, बोहतान न लगाएंगे, किसी अम्रे मा'रूफ़ (नेकी के काम) में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी न करेंगे चूंकि औ़रतों से इन ही बातों पर बैअ़त हुई

www.dawateislami.net

थी इस लिये बैअ़ते मज़्कूरा को औ़रतों की सी बैअ़त कहा गया। नुबुव्वत के तेरहवें साल अय्यामे ह़ज में अन्सार के साथ उन की क़ौम के बहुत से मुश्रिक भी ब ग़-रज़े ह़ज मक्कए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में आए, जब ह़ज से फ़ारिग़ हुए तो उन में से 73 मर्द और 2 औ़रतें अपनी क़ौम से छुप कर अय्यामे तश्रीक़ में रात के वक़्त उ़क़्बए मिना में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे मिसाल ह़ुस्ने अख़्लाक़, बे इन्तिहा सब्रो तह़म्मुल, ह़द द-रजा अ़फ़्वो दर गुज़र और जहदे मुसल्सल व सअ़ये पैहम का ही येह असर था कि आख़िर कार अ़रब क़बाइल गुरौह दर गुरौह ह़ल्क़ए इस्लाम में दाख़िल होने लगे और निहायत मुख़्तसर से अ़र्से में जज़ी-रतुल अ़रब इस्लाम के नूर से जग-मगा उठा। हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिये बेहतरीन नमूना है जिस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेह़नतो मशक़्क़त के साथ नेकी की दा'वत को आ़म किया इसी त़रह़ हमें भी चाहिये कि अपने प्यारे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की बजा आ-वरी और इस राह में आने वाली हर मुसीबत को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करते हुए नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये कोशां हो जाएं।

مدینہ

1 ..... सीरते रसूले अ़-रबी, स. 97 ता 99, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ज़ुल्म, कुफ़्फ़ार के हंस के सहते रहे
फिर भी हर आन हक़ बात कहते रहे
कितनी मेहनत से की तुम ने तब्लीग़े दीं
तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

(वसाइले बख़्शिश)

अख़्लाक़े करीमा की एक झलक

अर्ज़ : सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा का कोई वाक़िआ़ बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के क्या कहने कि ख़ुद ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के बारे में पारह 29 **सूरए क़लम** की आयत नम्बर 4 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝۴

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है ।

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन हिश्शाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास आया और अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! मुझे रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बारे में बताइये । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन था, क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं पढ़ा :

www.dawateislami.net

﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है ।[1] आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अपने मश्हूरे ज़माना ना'तिया दीवान ह़दाइक़े बख़्शिश में फ़रमाते हैं :

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा, तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा, तेरे ख़ालिक़े ह़ुस्नो अदा की क़सम !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या के मालो मताअ़ के लिये इर्शाद फ़रमाया : ﴿قُلْ مَتَاعُ الدُّنْیَا قَلِیْلٌ﴾[2] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ''तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है ।'' दुन्या के क़लील होने के बा वुजूद हम दुन्यवी ने'मतें नहीं गिन सकते तो जिन के अख़्लाक़ के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ﴾[3] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ''और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है ।'' उन के अख़्लाक़े करीमाना को कमा ह़क़्क़ुहू कैसे बयान कर सकते हैं । बहर ह़ाल ह़ुसूले ब-र-कत के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ुस्ने अख़्लाक़ और सब्रो तह़म्मुल का एक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम अह़मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो क़बूले इस्लाम से पहले एक यहूदी

مدینہ

1 ..... مُسندِ احمد، ج۹، ص۳۸۰، حدیث ۲۴۶۵۵ 2 ..... پ۵، النسآء: ۷۷

3 ..... پ۲۹، القلم: ٤

www.dawateislami.net

आ़लिम थे। उन्हों ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खजूरों का सौदा किया, मुआ़-हदे के मुताबिक़ खजूरें देने की मुद्दत में अभी दो तीन दिन बाक़ी थे कि उन्हों ने भरे मज्मअ़ में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने अक़्दस पकड़ कर इन्तिहाई तल्ख़ो तुर्श लहजे में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खजूरों का मुता़-लबा किया और चिल्ला चिल्ला कर कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम सब अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद का येही त़रीक़ा है कि तुम लोग लोगों के हुक़ूक़ अदा करने में देर लगाते हो। **येह** मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जलाल आ गया और निहायत ही ग़ज़ब नाक नज़रों से घूर कर देखा और कहा : ऐ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तू ख़ुदा के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसी गुस्ताख़ी कर रहा है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अदब मानेअ़ न होता तो मैं अभी तलवार से तेरी गरदन उड़ा देता। येह सुन कर ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (कमाले इन्किसारी का मुज़ा-हरा करते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) तुम येह क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो चाहिये था कि मुझे अदाए ह़क़ की तरग़ीब और इस को नरमी के साथ तक़ाज़ा करने की हिदायत कर के हम दोनों की मदद करते।" फिर सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म

www.dawateislami.net

दिया : ऐ उ़मर ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) इस को इस के ह़क़ के बराबर खजूरें दे दो और कुछ ज़ियादा भी दे दो।

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस को ह़क़ से ज़ियादा खजूरें दीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मेरे ह़क़ से ज़ियादा क्यूं दे रहे हो ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "चूंकि मैं ने टेढ़ी तिरछी (या'नी ग़ज़ब नाक) नज़रों से देख कर तुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया था, इस लिये ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारी दिलजूई के लिये तुम्हारे ह़क़ से ज़ियादा खजूरें देने का मुझे हुक्म दिया है।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) क्या तुम मुझे पहचानते हो कि मैं ज़ैद बिन सा'ना हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वोही ज़ैद बिन सा'ना जो यहूदियों का बड़ा आ़लिम है ? उन्हों ने कहा : "जी हां।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया फिर तुम ने शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ऐसी गुफ़्त-गू क्यूं की ? ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि ऐ उ़मर ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) दर अस्ल बात येह है कि मैं ने तौरात शरीफ़ में जितनी निशानियां नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पढ़ी थीं उन सब को मैं ने ताजदारे

www.dawateislami.net

मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मौजूद पाया मगर दो और निशानियों के बारे में मुझे इम्तिहान करना बाक़ी था : एक येह कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िल्म (या'नी नरमी) जह्ल (या'नी जहालत) पर ग़ालिब रहेगा और दूसरा येह कि उन के साथ जिस क़दर ज़ियादा जह्ल का बरताव किया जाएगा उसी क़दर उन का ह़िल्म बढ़ता ही चला जाएगा लिहाज़ा इस तरकीब से मैं ने इन दोनों निशानियों को भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में देख लिया और मैं शहादत देता हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबिय्ये बरह़क़ हैं और ऐ उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मैं बहुत मालदार आदमी हूं और मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि ''मैं ने अपना आधा माल ह़बीबे परवर दगार, सरकारे अबद क़रार, अह़मदे मुख़्तार, दो जहां के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर स-दक़ा किया ।'' फिर आप बारगाहे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और कलिमा पढ़ कर दामने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आ गए ।[1]

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया
जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा और तह़म्मुल व बुर्दबारी का ही नतीजा है कि यहूदियों के बहुत

مدینہ

1 ..... دَلَائِلُ النُّبُوَّة، ص ۹۲، ملخصاً

www.dawateislami.net

बड़े आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों से लिपट गए और हमेशा के लिये ग़ुलामी का पट्टा गले में डाल लिया, दौलते ईमान से दामन भर लिया और इस ख़ुशी में अपना आधा माल भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों पर निछावर कर दिया।

बुज़ुर्गाने दीन का सब्रो तह़म्मुल और हुस्ने अख़्लाक़

अ़र्ज़ : इस्लाम की इशाअ़त में बुज़ुर्गाने दीन की मसाइ़ये जमीला और हुस्ने अख़्लाक़ व तह़म्मुल व बुर्द-बारी के कुछ वाक़िआ़त बयान फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इ़ल्मो अ़मल के पैकर होते थे। हर एक के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आते यहां तक कि ग़ैर मुस्लिम उन के हुस्ने अख़्लाक़ और आ'ला किरदार से मु-तअस्सिर हो कर दामने इस्लाम में आ जाते चुनान्चे तज़्किरतुल औलिया में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی का एक यहूदी पड़ोसी था वोह कहीं सफ़र में चला गया और इफ़्लास की वज्ह से उस की बीवी चराग़ तक रोशन नहीं कर सकती थी और तारीकी की वज्ह से उस का बच्चा तमाम रात रोता रहता। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हर रात उस के यहां चराग़ रख आते और जिस वक़्त वोह यहूदी सफ़र से वापस आया तो उस की बीवी ने तमाम वाक़िआ़ सुनाया जिस को सुन कर

www.dawateislami.net

उस ने कहा कि येह बात किस क़दर अफ़्सोस नाक है कि इतना अ़ज़ीम बुज़ुर्ग हमारा पड़ोसी हो और हम गुमराही में ज़िन्दगी गुज़ारें । चुनान्चे मियां बीवी आप के हाथ पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए ।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

इसी त़रह़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर होने के साथ साथ सब्रो तह़म्मुल का भी ख़ूब मुज़ा–हरा फ़रमाते, कोई कितनी ही तक्लीफ़ दे इन्तिक़ाम लेने के बजाए सब्रो तह़म्मुल से काम लेते इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के सब्रो तह़म्मुल की ह़िकायत मुला–ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे तज़्किरतुल औलिया में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने किसी यहूदी के मकान के क़रीब किराए पर मकान ले लिया और आप का हुजरा यहूदी के दरवाज़े से मुत्तसिल था । चुनान्चे यहूदी ने दुश्मनी में एक ऐसा परनाला बनवाया जिस के ज़रीए़ पूरी गन्दगी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मकान पर डालता रहता और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नमाज़ की जगह नापाक हो जाया करती और बहुत अ़र्से तक वोह येह अ़मल करता रहा लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने शिकायत नहीं की । एक दिन उस यहूदी ने ख़ुद ही आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की कि मेरे परनाले की वज्ह से आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को कोई

مدینہ

1 ...... تذکرۃ الاولیاء، ص ۱۴۲

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ तो नहीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : परनाले से जो ग़लाज़त गिरती है उस को झाडू ले कर रोज़ाना धो डालता हूं, इस लिये मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं। यहूदी ने अ़र्ज़ की, कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इतनी अज़िय्यत बरदाश्त करने के बा'द भी कभी गुस्सा नहीं आया ? फ़रमाया : ख़ुदा तआ़ला का इर्शाद है कि जो लोग गुस्से पर क़ाबू पा लेते हैं न सिर्फ़ उन के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं बल्कि उन्हें सवाब भी ह़ासिल होता है। येह सुन कर यहूदी ने अ़र्ज़ की, कि यक़ीनन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़्हब बहुत उ़म्दा है क्यूं कि इस में दुश्मनों की अज़िय्यतों पर सब्र करने को अच्छा कहा गया है और आज मैं सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल करता हूं।[1] **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने औलिया के सदक़े तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता आ़शिक़ाने रसूल की नेकी की दा'वत, हुस्ने अख़्लाक़ और मिलन सारी से भी मु-तअस्सिर हो कर सेंकड़ों कुफ़्फ़ार दौलते इस्लाम से मालामाल हो कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं जिस की ख़बरें वक़्तन फ़ वक़्तन

مدینہ

1 ...... تذکرۃ الاولیاء، ص ۵۱

www.dawateislami.net

अन्दरूने मुल्क व बैरूने मुल्क से मौसूल होती रहती हैं। इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा कीजिये चुनान्चे

सूबा बलूचिस्तान के अ़लाक़े बेला (ज़िलअ़ लसबेला) के रिहाइश पज़ीर एक नौ मुस्लिम इस्लामी भाई की दास्तान अल्फ़ाज़ की कमी बेशी के साथ पेशे ख़िदमत है : दीने इस्लाम की पुरनूर फ़ज़ाओं में आने से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के "अनमोल हीरे" कुफ़्रो शिर्क की तारीक वादियों में ज़ाएअ़ हो रहे थे। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की शाने बे नियाज़ी पे क़ुरबान कि जिस ने मुझ निकम्मे और खोटे इन्सान को इस्लाम की दौलत अ़ता फ़रमाई। मेरे क़बूले इस्लाम का सबब दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक मुबल्लिग़ इस्लामी भाई बने। हुवा कुछ यूं कि एक दिन मेरी मुलाक़ात उस सब्ज़ इ़मामा सजाए मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से हो गई। वोह इस्लामी भाई मुझे जानते नहीं थे, दौराने गुफ़्त-गू जब मैं ने अपना ग़ैर मुस्लिम होना ज़ाहिर किया तो उन का रंग एक दम फीका पड़ गया, उन के चेहरे पर ग़म के आसार नुमायां थे। उस इस्लामी भाई ने निहायत दर्द भरे अन्दाज़ में इस्लाम की अ़-ज़मत, इस के नुमायां पहलू और मुसावात के बारे में बताया कि इस्लाम में किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं। मुझे यूं मह़सूस होने लगा जैसे येह मेरे बहुत बड़े ख़ैर ख़्वाह हैं, उन के दिलकश और लजाजत भरे

www.dawateislami.net

अन्दाज़ ने मेरा दिल मोह लिया । उन की पुर तासीर गुफ़्त-गू से मैं बेहद मु-तअस्सिर हुवा क्यूं कि आज तक इस अन्दाज़ में इस्लाम के मु-तअ़ल्लिक़ किसी ने नहीं समझाया था नीज़ उन के हुस्ने अख़्लाक़ और मिलन सारी के अन्दाज़ ने मुझे अपना गिरवीदा बना लिया । मुझे यक़ीन हो गया कि नजात इसी रास्ते पर चलने में है चुनान्चे मैं ने उसी इस्लामी भाई के हाथ पर 19 जुमादिल उख़्रा 1427 सि.हि. ब मुताबिक़ 12 जूलाई 2006 सि.ई. को कलिमए तय्यिबा ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ'' पढ़ा और इस्लाम क़बूल कर लिया ।

मेरी ख़ुश नसीबी कि इस्लाम क़बूल करने के कुछ ही दिनों बा'द दा'वते इस्लामी के मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की तय्यारियां शुरूअ़ हो गईं । एक इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश की बदौलत मुझे भी बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई । इज्तिमाअ़ में लाखों लाख इमामे और दाढ़ी वाले इस्लामी भाइयों को देख कर दिल में इस्लाम की अ़-ज़मत और दा'वते इस्लामी की महब्बत घर कर गई । ज़िक्रो दुआ़ और तसव्वुरे मदीना ने मुझे एक पुरकैफ़ रूहानिय्यत से सरशार कर दिया । इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश की बदौलत राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह

www.dawateislami.net

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की जहां दीगर बे शुमार ब-र-कतें नसीब हुईं वहीं दीने इस्लाम के बहुत सारे बुन्यादी मसाइल सीखने का भी मौक़अ़ हाथ आया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हूं और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं।

मुबल्लिग़ीन के लिये 10 म-दनी फूल

अ़र्ज़ : कुफ़्फ़ार को इस्लाम की त़रफ़ राग़िब करने और उन्हें नेकी की दा'वत देने के लिये मुबल्लिग़ का किन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होना ज़रूरी है इस बारे में कुछ म-दनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : कुफ़्फ़ार को इस्लाम की त़रफ़ राग़िब करने और उन्हें मुअस्सिर त़ौर पर नेकी की दा'वत देने के लिये मुबल्लिग़ीन के 10 म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा कीजिये :

- **ईमाने मोह्कम व यक़ीने कामिल :** दीने इस्लाम, कि मुबल्लिग़ जिस की त़रफ़ लोगों को दा'वत दे रहा है उस पर ख़ुद उस का ईमान इतना पुख़्ता और यक़ीन ऐसा मोह्कम (मज़बूत़) हो कि इस में ज़र्रा बराबर भी शको शुबा की गुन्जाइश न हो। दुन्या का कोई मालो दौलत, ज़ैबो ज़ीनत, ह़िर्सो त़मअ़, जब्रो इकराह (ज़बर दस्ती) राहे ह़क़ से इसे बरगश्ता (दूर) न कर सके।
- **इल्मे दीने :** ग़ैर मुस्लिम को इस्लाम की दा'वत देना हर

www.dawateislami.net

एक का काम नहीं, इस के लिये ऐसा आ़लिम होना चाहिये जो मज़ाहिबे आ़लम की मा'लूमात रखता हो, उसे मा'लूम हो कि वोह क्या क्या ए'तिराज़ात कर सकता है और उन ए'तिराज़ात के जवाबात क्या हैं ? अगर आ़म मुबल्लिग़ ग़ैर मुस्लिम को इस्लाम की दा'वत देगा तो हो सकता है कि वोह इसे दीने इस्लाम के ख़िलाफ़ ऐसे दलाइल दे जिस से येह ख़ुद वसाविस का शिकार हो जाए लिहाज़ा आ़म मुबल्लिग़ीन को मुसल्मानों ही में नेकी की दा'वत आ़म करनी चाहिये ।

- **अ़-मले सालेह़ :** अरकाने इस्लाम का पाबन्द और सुन्नते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आईना दार हो या'नी बा अ़मल हो कि ज़ेवरे इ़ल्म के साथ अ़मल की क़ुव्वत भी हो तो दा'वत ज़ियादा मुअस्सिर व कारआमद होती है ।
- **इख़्लास व रिज़ाए इलाही :** इस्लाम की दा'वत देते वक़्त ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की निय्यत मल्हूज़े ख़ातिर (पर दिली तवज्जोह) रहे, नेकी की दा'वत के सिले (बदले) में किसी दुन्यवी मालो जाह या नुमूदो नुमाइश का त़ालिब न हो बल्कि महज़ बारगाहे ख़ुदावन्दी से अज्रो सवाब का उम्मीदवार हो और "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के आ़लमगीर म-दनी मक़्सद की बजा आ-वरी के लिये ह़क़ीक़ी जज़्बे से सरशार हो ।
- **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **पर तवक्कुल :** अपने कसीर इ़ल्म, ज़ोरे बयान और सलाहिय्यत व क़ाबिलिय्यत पर नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करने वाला हो कि वोही हिदायत देने वाला है ।

www.dawateislami.net

❁ **अख़्लाक़ व किरदार :** हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर हो और नरमी का ख़ूगर हो । कुरआने मजीद में है : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ﴾[1] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से इस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो ।

❁ **सब्रो तह़म्मुल, अ़फ़्वो दर गुज़र :** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में कोई मुश्किल दरपेश हो जाए, किसी तल्ख़ कलाम से वासित़ा पड़ जाए तो सब्र करने वाला हो बल्कि कोई पथ्थर भी मार दे तो आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत की निय्यत करते हुए उसे मुआ़फ़ करने का जज़्बा रखता हो न कि इन्तिक़ामी जज़्बात से मग़्लूब हो कर तै़श में आ जाए कि

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

मुबल्लिग़ जब किसी को नेकी की दा'वत दे तो निहायत ख़ुश अख़्लाक़ी और ख़न्दा पेशानी से पेश आए। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی "कीमियाए सआ़दत" में नक़्ल करते हैं : किसी ने मामूनुर्रशीद को किसी ग़-लत़ी पर सख़्ती से टोका, इस पर उस ने कहा, बुज़ुर्ग वार ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने

مدینہ

[1]...... پ۱۴، النحل: ۱۲۵

www.dawateislami.net

आप से बेहतर या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुझ से बदतर या'नी फ़िरऔन के पास जाने का जब हुक्म फ़रमाया तो इर्शाद हुवा : ﴿فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا﴾[1] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस से नर्म बात कहना।[2] सब्रो तह़म्मुल और अ़फ़्वो दर गुज़र के ह़वाले से सफ़रे त़ाइफ़ और फ़त्ह़े मक्का के बे मिसाल वाक़िआ़त हमारी रहनुमाई के लिये काफ़ी हैं।

❁ **ह़िक्मत व ह़ुस्ने तदबीर :** ह़ालात भांप कर और मौक़अ़ महल देख कर उस के मुत़ाबिक़ गुफ़्त-गू करने वाला हो कि अगर मुआ़-मला दुश्वार हो जाए तो ह़िक्मते अ़-मली से उस को टाल सके, ख़ुद किसी बह़सो तकरार में न उलझे बल्कि उस के लिये किसी आ़लिम साह़िब के पास जाने का मश्वरा दे।

❁ **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر :** जहां भी कोई बुराई देखे ह़स्बे इस्तित़ाअ़त (अपनी बिसात़ और ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़) امر بالمعروف و نہی عن المنکر (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़) करने वाला हो। इस में टाल मटोल से काम ले न किसी मलामत करने वाले की परवाह करे।

❁ **रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से पुर उम्मीद :** हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखने वाला हो और मायूसी को क़रीब भी न फटकने दे।

مدینہ

1 ..... پ۱۶، طٰہٰ: ۴۴ 2 ..... اِحیاءُ العُلُوم، ج۲، ص۴۱۱

www.dawateislami.net

काफ़िर से दोस्ती करना कैसा है ?

अ़र्ज़ : काफ़िर से दोस्ती करना कैसा है ?

इर्शाद : सोह़बत का बड़ा असर होता है, अच्छे दोस्त की सोह़बत अच्छा और बुरे दोस्त की सोह़बत बुरा रंग लाती है लिहाज़ा अच्छे दोस्त का इन्तिख़ाब करते हुए बुरे दोस्त से दूर भागना चाहिये कि इस की सोह़बत दीनो ईमान के लिये नुक़्सान देह साबित हो सकती है इस लिये ह़दीसे पाक में दोस्ती करने से पहले जांच पड़ताल करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया गया है चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्त वर है : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तो तुम में से हर एक देखे कि वोह किस को दोस्त बना रहा है ।[1]

काफ़िर से दोस्ती करना सख़्त ह़राम और गुनाह है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हर काफ़िर से दोस्ती और मिलाप सख़्त मन्अ़, ह़राम और बहुत बड़ा गुनाह है और अगर दीनी रुज्ह़ान की बिना पर हो तो बिला शुबा कुफ़्र है ।"[2]

कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमा-न-अ़त पर आयाते मुबा-रका

अ़र्ज़ : कुफ़्फ़ार से दोस्ती के बारे में कुरआने मजीद हमारी क्या

मदينه

1 ...... اَبُوداؤد، ج۴،ص۳۴۱،حدیث۴۸۳۳

2 ...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 2, स. 125

www.dawateislami.net

रहनुमाई फ़रमाता है ?

इर्शाद : कुरआने मजीद में मु-तअ़द्दिद मक़ामात पर कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात (या'नी बाहमी इत्तिहाद) की मुमा-न-अ़त बयान फ़रमाई गई है चुनान्चे पारह 3 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 28 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान काफ़िरों को अपना दोस्त न बना लें मुसल्मानों के सिवा और जो ऐसा करेगा उसे **अल्लाह** से कुछ इलाक़ा न रहा मगर येह कि तुम उन से कुछ डरो।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मह़ब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है, इन्हें राज़दार बनाना, इन से मुवालात (या'नी बाहमी इत्तिह़ाद) करना ना जाइज़ है। अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है।

पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 68 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

www.dawateislami.net

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बुरी सोह़बत से बचना निहायत ज़रूरी है। बुरा यार बुरे सांप से बदतर है कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है।

इसी त़रह़ पारह 28 **सू-रतुल मुजा-दलह** की आयत नम्बर 22 में इर्शाद होता है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ा-लफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में है : ''या'नी मोमिने कामिल की अ़लामत येह है कि इस का दिल कुफ़्फ़ार की त़रफ़ नहीं झुकता और उन से

www.dawateislami.net

मुत्लक़न उल्फ़त नहीं होती, इस के मां बाप भाई बहन काफ़िर हों तो इस के दिल में उन से उल्फ़त नहीं होती, महब्बते इलाहिय्यह दिल में दुश्मनाने दीन की महब्बत नहीं आने देती। **अल्लाह** तआ़ला ऐसा कामिल ईमान नसीब करे। इस आयत से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो कहते हैं कि हर मोमिन व काफ़िर को अपना भाई समझो।"

पारह 12 **सूरए हूद** की आयत नम्बर 113 में इर्शाद होता है :

وَلَا تَرْكَنُوْۤا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़ालिमों की त़रफ़ न झुको कि तुम्हें आग छूएगी।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : इस से मा'लूम हुवा कि ख़ुदा के ना फ़रमानों के साथ या'नी काफ़िरों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेलजोल, रस्मो राह, मुवद्दत व महब्बत, हां में हां मिलाना, उन की ख़ुशामद में रहना मम्नूअ़ है।

पारह 6 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 51 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ वोह आपस में

www.dawateislami.net

يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۵۱

एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है बेशक **अल्लाह** बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते मुबा-रका के तह़्त ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में फ़रमाते हैं : इस आयत में यहूदो नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात या'नी उन की मदद करना, उन से मदद चाहना, उन के साथ मह़ब्बत के रवाबित़ रखना मम्नूअ़ फ़रमाया गया।

शाने नुज़ूल : येह आयत ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबी और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सलूल के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था। ह़ज़रते उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि यहूद में मेरे बहुत कसीरुत्ता'दाद दोस्त हैं जो बड़ी शौकतो क़ुव्वत वाले हैं अब मैं उन की दोस्ती से बेज़ार हूं और **अल्लाह** व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की मह़ब्बत की गुन्जाइश नहीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूद की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता। मुझे पेश आने वाले ह़वादिस का अन्देशा है और मुझे उन के साथ रस्मो राह रखनी ज़रूरी है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से फ़रमाया कि यहूद की दोस्ती का दम भरना तेरा

www.dawateislami.net

ही काम है उ़बादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का काम नहीं।

इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर कोई भी हों उन में बाहम कितने भी इख़्तिलाफ़ हों मुसल्मानों के मुक़ाबले में वोह सब एक हैं, اَلْکُفْرُ مِلَّۃٌ وَّاحِدَۃٌ (या'नी कुफ़्र एक ही क़ौम है) इस में बहुत शिद्दतो ताकीद है कि मुसल्मानों पर यहूदो नसारा और हर मुख़ालिफ़े दीने इस्लाम से अ़लाहि़दगी और जुदा रहना वाजिब है।

कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमा-न-अ़त पर अह़ादीसे मुबा-रका

अ़र्ज़ : कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमा-न-अ़त पर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका भी बयान फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : क़ुरआने मजीद की त़रह़ अह़ादीसे मुबा-रका में भी कुफ़्फ़ार से दोस्ती व हम-नशीनी की सख़्त मुमा-न-अ़त बयान फ़रमाई गई है, इस बारे में चन्द अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा कीजिये और कुफ़्फ़ार से दोस्ती करने और इन की सोह़बते बद से बचने का सामान कीजिये :

❁ हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उस का ह़श्र उसी के साथ होगा।[1]

❁ जो मुश्रिक से यक्जा हो और उस के साथ रहे वोह उसी

مدینہ

1 ..... مُعْجَمِ اَوْسَط، ج۵، ص۱۹، حدیث ۶۴۵۰

www.dawateislami.net

मुशरिक की मानिन्द है ।[1]

❁ बुरे मुसाहिब (या'नी साथी) से बच कि तू उसी के साथ पहचाना जाएगा ।[2]

❁ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पसन्द फ़रमाया और मेरे लिये अस्हाबो अस्हार (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से शादी जाइज़ नहीं) पसन्द किये और अन्क़रीब एक क़ौम आएगी कि इन्हें बुरा कहेगी और इन की शान घटाएगी, तुम उन के पास मत बैठना, न उन के साथ पानी पीना, न खाना खाना, न शादी बियाहत करना ।[3]

❁ मैं क़सम खा कर कहता हूं कि जो शख़्स किसी क़ौम से दोस्ती करेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे उन्हीं का साथी बनाएगा ।[4]

❁ हर क़ौम के दोस्तों को **अल्लाह** तआ़ला उन्हीं के गुरौह में उठाएगा ।[5]

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن कुफ़्फ़ार से दोस्ती व हम-नशीनी की मुमा-न-अ़त पर क़ुरआनो ह़दीस से कसीर दलाइल नक़्ल

مدینہ

1 ...... اَبُوداوٗد، ج۳،ص۱۲۲، حدیث۴۸۳۲

2 ...... کَنْزُالْعُمَّال، ج۹،ص۱۹، حدیث۲۴۸۳۹

3 ...... کَنْزُالْعُمَّال، ج۱۱،ص۲۴۱، حدیث۳۲۴۶۵

4 ...... جامِع صغیر، ص۲۰۷، حدیث ۳۴۴۶

5 ...... مُعْجَمِ کَبِیْر، ج۳،ص۱۹، حدیث۲۵۱۹

www.dawateislami.net

करने के बा'द ख़ुलासए कलाम यूं इर्शाद फ़रमाते हैं : बिल जुम्ला बिला ज़रूरते शरइय्या इस अम्र का मुर-तकिब न होगा मगर दीन में मुदाहिन (सुस्ती करने वाला। बात छुपाने वाला) या अ़क़्ल से मबाइन (आ़री), سُبْحٰنَ الله ! कितने शर्म की बात है कि आदमी के मां बाप को अगर कोई गाली दे उस की सूरत देखने को रवादार न रहे और ख़ुदा और रसूल को बुरा कहने वालों को ऐसा यारे ग़ार बनाए ! ﴿ اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴾[1] **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।'' **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ (या'नी) तुम में कोई मुसल्मान नहीं होता जब तक मैं उसे उस की औलाद और मां बाप और तमाम आदमियों से ज़ियादा प्यारा न होउं।[2] दलाइल कसीर हैं और गोश शिन्वा (या'नी जो सुन कर कहा माने और इ़ब्रत ह़ासिल करे) को इसी क़दर काफ़ी, फिर जो न माने संगदिल है, और काफ़िर आग, आग का साथ जो पथ्थर देगा वोह ख़ुद इतना गर्म हो जाएगा कि आदमी को इस से बचना चाहिये, पस अगर अहले इस्लाम उन लोगों (या'नी कुफ़्फ़ार से दोस्ती करने वालों) से एह़तिराज़ (परहेज़) करें कुछ बे जा न करेंगे।[3]

1 ...... پ۲، البقرۃ:۱۵۶
2 ...... بخاری، ج۱، ص۱۷، حدیث ۱۵
3 ...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 319

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآنِ پاک	کلام باری تعالٰی	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
2	ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
3	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
4	صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
5	سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
6	مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
7	المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالفکر بیروت
8	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
9	کَنزُالعُمّال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
10	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
11	دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
12	البدورُ السّافرۃ فی اُمور الاخرۃ	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	موسستہ الکتب الثقافیۃ ۱۴۲۵ھ
13	سیرت رسول عربی	علامہ نور بخش توکلی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
14	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
15	فتاوٰی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
16	تذکرۃُ الاولیا	شیخ فرید الدین عطار، متوفّٰی ۶۳۷ھ	اِنتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ

फ़ेहरिस

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत........ 2
सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन........ 3
अख़्लाक़े करीमा की एक झलक........ 9
बुज़ुर्गाने दीन का सब्रो तहम्मुल और हुस्ने अख़्लाक़........ 14
मुबल्लिग़ीन के लिये 10 म-दनी फूल........ 19
काफ़िर से दोस्ती करना कैसा है ?........ 23
कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमा-न-अ़त पर आयाते मुबा-रका........ 23
कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमा-न-अ़त पर अहादीसे मुबा-रका........ 28

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

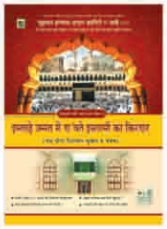

मक-त-बातुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net